बोलियां बोलना
(19:6)

प्रेरितों 19:6 में हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में आश्चर्यजनक ढंग से अन्य-अन्य भाषा बोलने का अन्तिम उल्लेख मिलता है। इस घटना से सम्बन्धित बातों के विषय में कुछ कहने का यह अच्छा समय हो सकता है।

कई वर्षों से एक लहर चल रही है, जिसे कभी-कभी पैन्टीकॉस्टल लहर का नाम भी दिया जाता है, जिसमें यह सिखाया जाता है कि नये नियम के समय के आश्चर्यकर्म आज भी होते हैं। हाल ही के वर्षों में यह ''करिश्माई लहर'' या ''नव-पैन्टीकॉस्टलवाद'' साम्प्रदायिक कलीसियाओं की सीमाओं को पार कर गई है।

आश्चर्यकर्म की इच्छा बढ़ाने में सम्भवत: बहुत सी बातों का योगदान है। इन बातों में (1) बहुत सी ''स्थापित'' कलीसियाओं की निराश करने वाली औपचारिकता के प्रति प्रतिक्रिया, (2) समयों की अनिश्चितता के प्रति प्रतिक्रिया (कई लोगों को विश्वास के बजाय देखकर चलना अच्छा लगता है; देखिए 2 कुरिन्थियों 5:7) और (3) बाइबल पर बढ़ने वाले आक्रमणों पर प्रतिक्रिया शामिल है। (मनुष्य *कुछ न कुछ* विश्वास करना चाहता है; यदि उसे लगे कि अब वह बाइबल पर निर्भर नहीं रह सकता, तो वह रहस्यवाद की ओर मुड़ जाएगा।)

करिश्माई लहर में एक नई बात ''अन्य भाषाओं में बोलने'' या ''ग्लोसेलेलिया'' पर ज़ोर का बढ़ना है। ''ग्लोसेलेलिया'' शब्द यूनानी ''भाषा'' के शब्द के साथ उस शब्द का मेल है जिसका अर्थ ''बोलना'' हो सकता है।

फिर, बहुत से कारण हैं कि आज इस विशेष दान पर इतना अधिक ज़ोर क्यों दिया जाता है। दो सम्भावनाएं ये हैं: (1) हमारे इस ''अधिक सभ्य'' युग में बोलियां बोलना पिछली पीढ़ियों के पैन्टीकॉस्टलवाद के उन्मत्त कामों से अधिक गम्भीर दिखाई देता है और इसलिए लोग उन्हें ज्यादा स्वीकार करते हैं, (2) बोलियां बोलना चंगाई देने, सांप उठाने या मुर्दों को जिलाने से आसान काम है।

आज बोलियां बोलने पर काफ़ी ज़ोर दिए जाने के बावजूद, इस विषय पर नये नियम में केवल पांच हवाले ही मिलते हैं। यीशु ने स्वयं बोलियां नहीं बोलीं। जब उसके चेलों ने उसे प्रार्थना करना सिखाने के लिए कहा, तो उसने उन्हें ''प्रार्थना करने की विशेष भाषा'' नहीं सिखाई, बल्कि उन्हें इस रीति से प्रार्थना करना सिखाया: ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग

में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए ...'' (मत्ती 6:9)।

इन पांच हवालों का अध्ययन करने में आपकी सहायता के लिए मैंने एक चार्ट बनाया है। थोड़ा समय देकर पृष्ठ 111 पर दिए चार्ट को देखें। आप देखेंगे कि चार्ट के बाईं ओर पांच महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे गए हैं, और विभिन्न हवालों के नीचे उनके उत्तर मिलते हैं। जहां रिक्त स्थान है, उसका अर्थ है कि उस पद में कोई विशेष उत्तर नहीं मिलता। सो हवालों में उसी प्रश्न का उत्तर दिया जाना चाहिए जहां पर उसका उत्तर मिलता है। चार्ट के नीचे कुछ व्याख्यात्मक नोट्स भी दिए गए हैं।

ध्यान दें कि यूनानी शब्द *ग्लौसा* हर एक हवाले में मिलता है और उसका सरल अर्थ है ''भाषा''। कुछ अनुवादक शास्त्र की व्याख्या अपने ढंग से करते हैं और इस प्रकार उन्होंने कुछ हवालों में इस शब्द को ''भावविभोर बोलियां'' बना दिया है; परन्तु एक अन्य यूनानी शब्द का अर्थ है ''बोली'' और उस शब्द का अर्थ कभी भी इस दान की व्याख्या के लिए इस्तेमाल नहीं किया गया।

आज के ग्लोसेलेलिया की नये नियम के समयों की भाषा बोलने से तुलना करते हुए पृष्ठ 115 पर एक दूसरा चार्ट है।

चार्ट पर नोट्स

उम्मीद है कि इस चार्ट में दी गई अधिकतर जानकारी अपनी व्याख्या स्वयं ही करेगी, परन्तु कई हवालों के बारे में थोड़ी व्याख्या करना आवश्यक है। उन हवालों को ढूंढ़ने में आपकी सहायता के लिए, चार्ट के बाईं ओर ''क,'' ''ख,'' और ''ग'' अक्षर मोटे करके दिए गए हैं, जबकि चार्ट के ऊपर ''1,'' ''2,'' ''3'' आदि नाम दिए गए हैं। ''1-क'' का अर्थ ''1. मरकुस 16:14-20'' के नीचे और ''क. क्या?'' के सामने; ''5-ग'' का अर्थ ''5. 1 कुरिन्थियों 12-14'' के नीचे ''ग. कैसे मिला?'' के सामने; इसी प्रकार सब कॉलमों को समझा जा सकता है। संक्षिप्त व्याख्या देते समय, मैंने मुख्य कॉलम में मोटे अक्षरों का प्रयोग किया है।

1-क. यीशु ने भाषाएं बोलने के सम्बन्ध में केवल **एक प्रतिज्ञा** की। इस कारण जिन आयतों में ''भाषाएं बोलने'' का अर्थ स्पष्ट किया गया है वही अर्थ उन आयतों में भी लागू होता है जहां पर उनका अर्थ नहीं समझाया गया।

1-ख. अधिकांश लोग स्वीकार करते हैं कि यीशु ने *सभी* विश्वासियों को *सभी* दान देने की प्रतिज्ञा नहीं की उस दान के लिए कुछ योग्यता होनी आवश्यक है। (मरकुस 16:14-20 के संदर्भ में, प्रतिज्ञा प्रेरितों के लिए थी।) चार्ट में, हमने केवल यह ध्यान दिया है कि भाषाएं बोलने का वायदा **कुछ विश्वासियों** को दिया गया था। उसी पंक्ति के दाईं ओर के कॉलम से पता चलता है कि कौन से विश्वासियों को यह दान मिला।

1-ङ. जिस भाषा का प्रयोग भाषाएं बोलने के लिए किया गया था उसी का विष पीने के सम्बन्ध में भी किया गया। इस कारण, मेरा सुझाव है कि भाषाएं बोलने का दान

बोलियां बोलना

	1. **मरकुस 16:14-20** **''नई-नई भाषा''**	2. **प्रेरितों 1; 2** **''अन्य-अन्य भाषा''**	3. **प्रेरितों 10; 11** **''भाषा''**	4. **प्रेरितों 19:1-7** **''भिन्न-भिन्न भाषा''**	5. **1 कुरिन्थियों 12-14** **''कई प्रकार की भाषा''**
क. **क्या?**	एक प्रतिज्ञा	समकालिक भाषायें प्रेरितों 2:4, 6, 8, 11	भाषायें जो सीखी नहीं थीं प्रेरितों 11:15, 17; 10:46		
ख. **किसे?**	कुछ विश्वासियों को	प्रेरितों को प्रेरितों 1:2-5, 26; 2:1-4, 7, 14, 37	अन्यजातियों से बने प्रथम मसीही प्रेरितों 11:8, 18	12 चेलों को	कुछ कुरिन्थियों को
ग. **द्वारा** **कैसे?**		पवित्र आत्मा प्रेरितों 1:5; 2:1-4	पिन्तेकुस्त की तरह	प्रेरितों के हाथ रखने से प्रेरितों 19:6 (8:18 भी देखिए)	''आत्मा के'' (विवरण नहीं दिया गया)
घ. **क्यों?**	वचन को पक्का करने के लिए ''चिह्न'' मरकुस 16:17, 20	एक चिह्न कि उन्होंने सत्य बोला प्रेरितों 2:33	एक चिह्न कि परमेश्वर ने अन्यजातियों को स्वीकार कर लिया था प्रेरितों 10:44-48; 11:18		''चिह्न'' अविश्वासियों के लिए 1 कुरिन्थियों 14:21-25
ङ. **कब तक?**	जब तक विष पीते हैं मरकुस 16:18	जब तक आंधी और आग की सी जीभें रहीं प्रेरितों 2:1-4	जब तक स्वर्गदूत आकर दर्शन देते रहे प्रेरितों 10:3, 11	भविष्यवाणी (आत्मा की प्रेरणा से प्रकाश) तक प्रेरितों 19:6	विश्वास और आशा के बहुत पहले ''सर्वसिद्ध'' के आने पर ''बन्द'' 1 कुरिन्थियों 13:8-13

उतनी **देर तक** ही रहना था **जितनी देर तक** विष पीने (और फिर भी कुछ हानि न होने) का दान।

2-ख. इस प्रमाण के लिए कि केवल **प्रेरितों** को ही यह दान मिला, ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 49 पर प्रेरितों 2 पर नोट्स देखिए।

2-ङ: प्रेरितों 2 के सभी चमत्कारी प्रदर्शनों (आंधी की आवाज़, आग की सी जीभें, भाषाएं बोलना) का उद्देश्य एक ही था (आयत 33)। यदि इनमें से आज एक भी बात होती है, तो सभी होनी चाहिए। इसलिए मेरा मानना है कि बोलियां बोलने का चमत्कारी प्रदर्शन **तब तक** रहा **जब तक आंधी और आग की सी जीभों** का विशेष प्रदर्शन। (कई लोग प्रेरितों 2:38 के अन्तिम भाग को भाषाओं का दान बनाने का यत्न करते हैं, परन्तु ऐसा है नहीं। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 79 पर प्रेरितों 2:38 पर नोट्स देखिए।)

3-क. मैं यह मानने से नहीं हिचकिचाता कि कुरनेलियुस और उसके परिवार ने वे **भाषाएं** बोलीं जिन्हें उन्होंने **सीखा नहीं** था, क्योंकि पतरस ने ज़ोर दिया कि उन्हें भी वही दान मिला था जो पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को मिला था। (इन पदों के विषय में ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' ''एक भला मनुष्य जो खोया हुआ था'' पाठ में नोट्स देखिए।)

3-ङ: कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन में परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को भेजने, दर्शनों और भाषाएं बोलने के द्वारा अपना उद्देश्य पूरा किया। (''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में ''एक भला मनुष्य जो खोया हुआ था'' पाठ में कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन पर नोट्स देखिए।) यदि आज इन चमत्कारी प्रदर्शनों में से एक भी होता है, तो दूसरे भी होने चाहिए। यह बात स्पष्ट है कि बोलियां बोलना **तब तक** रहा जब तक **स्वर्गदूत आते और दर्शन देते रहे**। इसके महत्व के लिए, अगला नोट देखिए।

4-ङ: जब पौलुस ने उन बारह चेलों पर हाथ रखे, तो ''वे भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने और भविष्यवाणी करने लगे'' (प्रेरितों 19:6)। इस कारण मेरा सुझाव है कि भाषाएं बोलना तब तक रहा जब तक (आत्मा के प्रकाश से) **भविष्यवाणी करना**। यदि कोई यह मानता है कि बोलियां बोलने का दान आज भी है, तो शास्त्र का विरोध न करते हुए, उसे बाइबल के अलावा कैथलिक, मॉरमन, सैवन्थ डे एडवेंटिस्ट, क्रिश्चियन साइंटिस्ट, और दूसरे लोगों के प्रकाशन मिलने के दावों को भी मानना चाहिए। (मेरे अनुभव के अनुसार बोलियां बोलने का दावा करने वाले लोग, बाइबल की चापलूसी करते हैं, परन्तु जैसे-जैसे वे इस लहर में आगे बढ़ते हैं, बाइबल की वास्तविक शिक्षाओं पर कम और अपनी काल्पनिक भावनाओं पर अधिक निर्भर होने लगते हैं।)

5-क. यह कॉलम खाली छोड़ा गया है, क्योंकि 1 कुरिन्थियों 12-14 में भाषाओं को परिभाषित नहीं किया गया। (लूका के पाठकों को परिभाषा की आवश्यकता थी, परन्तु कुरिन्थियों को नहीं।) KJV में ''अज्ञात भाषाएं'' है, परन्तु मूल शास्त्र में ''अज्ञात'' शब्द नहीं है; वहां केवल ग्लौसा शब्द है। शास्त्र में ऐसी कोई बात नहीं है जो हमें यह मानने के लिए बाध्य करती हो कि 1 कुरिन्थियों 12-14 प्रेरितों 2 और प्रेरितों 10 से भिन्न (अर्थात वे समकालीन भाषाएं, जिन्हें उन्होंने सीखा नहीं था) हैं।

5-ख. पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 12 में ज़ोर देकर कहा कि सबको एक जैसे दान नहीं मिले थे। इसका अर्थ यह है कि *कुरिन्थुस के कुछ ही मसीहियों को* भाषाएं बोलने का दान मिला था।

5-ग. पहला कुरिन्थियों 12-14 सिखाता है कि भाषाएं बोलने का दान **बिना कुछ बताए ''आत्मा द्वारा''** दिया जाता था। पूरी तरह समझने के लिए हमें दूसरे पदों में देखना होगा। दूसरे हवालों से हमें पता चलता है कि यह दान **पवित्र आत्मा के बपतिस्मे** (2-ग) या **प्रेरितों के हाथ रखने** (4-ग) से दिया जाता था। इस प्रकार, जैसे कि इस शृंखला की पिछली पुस्तकों में ध्यान दिलाया गया है, इस दान को प्राप्त करने के माध्यम आज उपलब्ध नहीं हैं।

5-घ. 1 कुरिन्थियों 14:23 में ''अविश्वासी'' शब्द का अर्थ अविश्वासी यहूदी या अविश्वासी अन्यजाति है। 14:21 में पौलुस ने यशायाह 28 का इस्तेमाल किया, जहां नबी ने कहा था कि अशूरियों का आना अविश्वासी इस्राएलियों (अर्थात, परमेश्वर के अविश्वासी बालकों) के लिए एक चिह्न होगा। हां, यह हो सकता है कि परमेश्वर की संतान विश्वास न करे। 1 कुरिन्थियों 14 में, भाषाओं का दान सम्भवत: **अविश्वासी** मसीहियों **के लिए** एक ''चिह्न'' था, निश्चय ही यह भी सम्भव है कि पौलुस के कहने का अभिप्राय अविश्वासी यहूदी था।

5-ङ. पहला कुरिन्थियों 13:8-13 स्पष्ट करता है कि आश्चर्यकर्म करने के दान मिलने बन्द हो जाने थे। फिर, आयत 13 संकेत देती है कि आश्चर्यकर्म करने के अस्थाई दानों की तुलना में विश्वास और आशा ही सदा तक रहने वाले दान हैं। इस प्रकार **विश्वास और आशा के समाप्त होने से बहुत पहले** आश्चर्यकर्म करने के दान मिलने बन्द हो जाने थे। यीशु के आने पर विश्वास और आशा जाते रहेंगे (विश्वास दृष्टि बन जाएगा और आशा वास्तविकता बन जाएगी), इसलिए चमत्कारी दान यीशु के आने से बहुत पहले बन्द होना जरूरी हैं। बहुत से लोग इस बात से सहमत हैं कि यीशु आज भी आ सकता है; यदि ऐसा हो जाए (और है भी), तो हमारे पास आज आश्चर्यकर्मों के दान नहीं होंगे। विशेष तौर पर, पौलुस ने कहा कि (''सर्वसिद्ध'') सम्पूर्ण और स्थाई के आने पर अस्थाई और अधूरा (दान) जाता रहेगा। यूनानी शब्द का अनुवाद ''सर्वसिद्ध'' अकर्मक है और इसका अनुवाद ''सर्वसिद्ध [या सम्पूर्ण] वस्तु'' के लिए हो सकता है। याकूब 1:25 में परमेश्वर के सिद्ध वचन के लिए इसी यूनानी शब्द का इस्तेमाल हुआ है। चमत्कारी दानों के द्वारा अस्थाई और अपूर्ण प्रकाश की जगह नये नियम में मिलने वाले स्थाई और पूर्ण प्रकाश ने ले ली।

सारांश

मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि आज कई लोग ''भावविभोर बोलियां'' बोलते हैं अर्थात अपने मुंह से ऐसे स्वर निकालते हैं जिन्हें समझा नहीं जा सकता, कई बार वे अचेत होकर ऐसे बोलते हैं। मैं जिस बात से इन्कार करता हूं वह यह है कि आज बोली

जाने वाली बोलियां नये नियम के समय में बोली जाने वाली भाषाओं जैसी नहीं हैं और न ही यह कि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ से बोली जाती हैं। ''बोलियां बोलना: एक तुलना'' चार्ट पृष्ठ पर 115 देखिये।

आज के बहुत से ''बोलियां बोलने वाले'' मानते हैं कि उनका ''दान'' (या दान जैसा कुछ) मनोवैज्ञानिक हो सकता है। फिर, उन्हें यह भी मान लेना चाहिए कि जिसे वे विभिन्न गुटों में मसीही होने का दावा करने वाले लोगों में बोलियां बोलने का ''दान'' मानते हैं वह झूठी शिक्षा है। और, उन्हें यह भी मानना चाहिए कि कुछ मूर्तिपूजक गुट भी ''बोलियां बोलते'' हैं। निश्चय ही, उनका विश्वास है कि दूसरे लोगों के पास परमेश्वर का सच्चा दान नहीं है, जबकि उनके पास है। परन्तु, सबका न्याय एक ही पुस्तक अर्थात बाइबल से ही होगा।

मेरी लाइब्रेरी में ढेरों ऐसी पुस्तकें हैं जिनमें व्याख्या मिलती है कि आज की ''बोलियां बोलने'' की बात मनोवैज्ञानिक प्रेरणा हो सकती है। मेरे पास एक और पुस्तक, अर्थात बाइबल भी है, जो कहती है कि ''भाषा बोलने'' की आज की बात चमत्कारी ढंग से नहीं है। मेरा विश्वास है कि यह निष्कर्ष स्पष्ट है।

बोलियां बोलना
एक तुलना

नये नियम के समय	आज
1. **भाषाएं** जिनकी उन्होंने शिक्षा नहीं ली थी।	1. सामान्यत: तरह-तरह की **आवाज़ें** जिन्हें ''भावविभोर बोलियां'' कहा जाता है।
2.**समकालीन** भाषाएं जिनका अर्थ होता है।	2. कई बार आधुनिक भाषाओं के शब्द या किसी ''अप्रचलित भाषा'' से सम्बन्धित दावे।
3. एक ही व्याख्या सम्भव।	3. आमतौर पर ''व्याख्या'' अलग-अलग।
4. सार्वजनिक प्रदर्शन पर ज़ोर।	4. व्यक्तिगत भक्तिपूर्ण उपयोग पर ज़ोर।
5. **परिपक्वता** या आत्मिक विकास से कोई सम्बन्ध नहीं।	5. आत्मा में बढ़ने और परिपक्व होने के एक स्रोत के चिह्न के रूप में ज़ोर।
6. वक्ता को परमेश्वर के पक्ष में होने को प्रमाणित नहीं करती थी।	6. परमेश्वर की स्वीकृति का प्रमाण समझा जाता है।
7. मुख्यत: **दूसरों** के लिए एक ''चिह्न''।	7. **अपने** लिए एक ''चिह्न'' माना जाता है।
8. वचन को पक्का करने के लिए इस्तेमाल की जाती थी।	8. लोगों को बाइबल के वास्तविक अधिकार से काल्पनिक अधिकार की ओर ले जाती है।
9. परमेश्वर की ओर से एक विलक्षण चिह्न।	9. मनोवैज्ञानिक प्रेरणा से हो सकता है।
10. गैर मसीही लोग इसकी नकल नहीं कर सकते थे।	10. मूर्तिपूजक धर्मों, झूठे सम्प्रदायों में ''भावविभोर बोलियां'' पाई जाती हैं।
11. सबके लिए भाषाएं बोलने पर कोई ज़ोर नहीं।	11. सब से यह ''दान'' पाने के लिए कहा जाता है।
12. सभा में बोलने के लिए विशेष निर्देश: केवल व्याख्या होने पर ही, केवल थोड़े ही लोग बारी-बारी से बोलें, और महिलाएं न बोलें, आदि।	12. आमतौर पर, नये नियम की प्रत्येक आज्ञा का उल्लंघन होता है।
13. विशेष उद्देश्य के लिए **अस्थाई** तौर पर दी गईं, **बन्द** हो जानी थीं।	13. मसीही युग के लिए परमेश्वर का **स्थाई** प्रबन्ध माना जाता है।
14. कोई ज़ोर नहीं दिया जाता था।	14. बहुत ज़ोर दिया जाता है।